© 2017 IJSRSET | Volume 3 | Issue 8 | Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099

भक्तिकाल में निहित वात्सल्य वर्णन

डा० सारिका सक्सेना

M5/104, अल्फा कार्प मेरठ वन कालोनी

मोदीपुरम, बाईपास, मेरठ, उत्तर प्रदेश,भारत।

सारांश– भक्तिकाल को सं० 1375 ई० से सं० 1700 ई० तक का काल माना जाता है। इस काल में दो सम्प्रदाय थे, निर्गुण सम्प्रदाय और सगुण सम्प्रदाय। दोनों सम्प्रदाय के कवियों ने शक्ति परख कवितायें लिखें। कबीर, निर्गुण सम्प्रदाय के कवि थे और सूरदार तथा तुलसी द्वारा सगुण कवि माने जाते हैं। सगुण सम्प्रदाय में राम और कृष्ण के भक्ति काव्य लिखे गये। इन काव्यों में माता कौशल्या व माता यशोदा का गौरवमयी चित्रण प्रस्तुत किया गय जबकि विमाताओं के रूप में कैकेयी व सुमित्रा का चरित्र भी कम महत्वपूर्ण नही है। अर्थात् भक्तिकाल भारतीय संस्कृति में मातृत्व का अनूठा उदाहरण प्रस्तुत करता है। इस शोध पत्र में भक्तिकाल में मातृत वात्सल्य को प्रस्तुत किया गया है।

मुख्यशब्द– भक्तिकाल, मातृत्व, वातसत्य, उपासक।

एक शिशु का वाल्यकाल प्रधानताः माता की गोद में व्यतीत होता है उसका संबंध वाल्यकाल से ही काव्य से जुड़ जाता है। माँ अपने बच्चे को लोरी गाकर सुलाती है। नारी की महिमा उसके मातृत्व मे ही देखी गयी है। संतो में भी परमात्मा के प्रति प्रेम को प्रकट करने के लिए माँ के प्रेम को ही प्रायः उपमान बनाया है। "भक्त और भगवान में ऐसा ही प्रेम होता है, जैसा बालक और माता में "दादू दयाल जी की अनुभूति है कि जैसे अपराधी पुत्र को भी माँ नही छोड़ती वैसे ही परमात्मा भी जीव का त्याग नहीं करता" इसी प्रकार अन्य सतों और कवियों ने भी मां के वात्सल्य का व्याख्यान अपने अपने शब्दों में किया है। माता के वात्सल्य में दो प्रमुख भावनायें होती हैं –पुत्र को जन्म देना और उसका चारित्रिक निर्माण करना। भारतीय सांस्कृतिक आदर्श के अनुसार "मातृत्व सुन्दर पुत्रों को जन्म देकर उन्हें ध्रुव जैसा पवित्र बनाने में हैं।"

सं० 1375 ई० के लगभग जब हिन्दी साहित्य में वीर गाथाओं का युग समाप्त हुआ तो सन्तों की भक्ति प्रधान वाणियों का युग प्रारम्भ हुआ। लोकोन्मुखी प्रवृत्ति के कारण इस काल की भक्ति भावना लोक प्रचलित भाषाओं में अभिव्यक्त हुई। इस युग को हिन्दी साहित्य का पूर्व मध्यकाल भी कहते हैं।

निर्गुण काव्यधारा के कवि कबीर के काव्य में केवल एक दो स्थानों पर ही मातृत्व दिखायी देता है। उन्होंने अपने काव्य में निर्णुण ब्रह्म को माता तथा स्वयं को पुत्र के रूप में दर्शाया है।

"हरि जननी में बालक तेरा, काहे न औगुण वकसठु मोरा"

सुत अपराध करै दिन केते, जननी कै चित रहै न तेते
कर गठि केस करैं जो घाता, तऊ न हेत उतारै माता
कहै कबीर एक बुधि विचारी, बालक दुखी दुखी महतारीû"

इसके विपरीत सगुण काव्यधारा में तुलसी साहित्य में दास के स्वर सर्वोच्च हैं। उनके साहित्य में वात्सल्य भावना का सजीव और स्वभाविक चित्रण नहीं हो पाया है। लेकिन राम कथा के मूल स्त्रोतों में राम को इष्ट रूप में ग्रहण करने की बात अवश्य मिलती है। वात्सल्य भाव का शुद्ध रूप दशरथ और उनकी रानियों के पुत्र प्रेम में ही दिखाई पड़ता है और विराट का तत्व यहां भी लगा हुआ है। जब राम का जन्म हुआ तभी कौशल्य को इस बाल रूप के विराट रूप का स्मरण हुआ तब माता ने राम से शिशु रूप में लीला करने की प्रार्थना की क्योंकि बाल रूप परम सुख देने वाला है। कौशल्या घुटने चलते हुए बालक के पीछे पीछे भागती है, उसे हंसाती और नचाती हैं तथा उंगली पकड़कर चलना सिखाती हैं।

"कौशल्या जब बोलन जाई। ठुमुक ठुमुक प्रभु चलहिं पराई
निगम नेति शिव संत न पावा। ताहि धरै जननी हठि धावा"
"ललित सुतहिं लालति सचु पाए। कौशल्या कल कनक अजिर मँह,"
सिखवति चलन अँगुरियाँ लाए।"
"चुटकी वजावति नचावति कौशल्या माता। बालकेलि गावति मल्टावति सुप्रेम भर।"
वात्सल्य में प्रेम विवश होकर कौशलया माता अपने शरीर की सुधि तक भूल जाति है।
"कौशल्यादि राम महतारी, "प्रेम विवश तनु दशा विसारी।"

सूरदास वात्सल्य चित्रण में अद्वितीय हैं। सूरदास के वात्सल्य वर्णन में अलौकिक एवं मानवीय भावों का सुंदर समन्वय हमें प्राप्त होता हैं। सूरसागर में कृष्ण के बाल रूप का चित्रण जिस प्रकार हुआ है, वह अत्यन्त दुर्लभ है। सुरदास का सूरसागर यशोदा के वात्सल्य परक हृदय की अप्रतिम झांकी प्रस्तुत करने के कारण भक्तिकाल के पट पर एक अमिट चिन्ह बन गया हैं आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने सूरदास की अत्यन्त प्रशंसा की है, उन्होंने कहीं लिखा है कि "सूरदास वात्सल्य का कोना–कोना झाँक आये हैं।" कृष्ण के जन्म से ही इसका उदाहरण प्राप्त हाता है। यशोदा की गोद में विराजमान कृष्ण की छवि की सुन्दर अभिव्यक्ति कवि सूरदास ने प्रस्तुत पंक्तियों में की है।

"गोद लिए जसुदा नन्दनंदहिं
पीत झहुलिया की छवि छाजति विज्जुलता सोहति मनु कंदहिं"

वालक कृष्ण पालने में लेटकर अपने पैर का अंगूठा मुंह में डाल रहे हैं, इस क्रिया का वर्णन सूर ने निम्न प्रकार किया है।

"कर पग गहिं अँगूठा मुख मेलत। प्रभु पौढ़े पालनै अकेले हरषि–हरषि अपने रंग खेलत।"

यशोदा माता द्वारा कृष्ण को पालने में झुलाने और कुछ गाने को निम्न पंक्तियों में वखणत किया है।

"जसोदा हरि पालने झुलावैं। हलरावै, दुलराई मल्हावै, जोई सोई कछु गावै।"

जब माता जसोदा कृष्ण को चलना सिखाती है तो उनके पैर सीधे नहीं पड़ते, इसे निम्न पंक्तियों में दर्शाया गया है।

"सिखवति चलन जसोदा मैया। अखराई कर पानि गहावत,डगमगाई धरनी धरै पैया।"

कुछ समय बाद बालक कृष्ण के बोलना प्रारंभ करने पर माता–पिता और ब्रजवासियों की प्रसन्नता की सीमा नही है।

"कहन लागे मोहन मैया मैया। नन्द महर सौ बाबा बाबा अरू हलधर सो भैया।"

बालक कृष्ण को चन्द्रमा को देखकर मचलना और इसे खाने की इच्छा करना अद्भुत है।

"मैया मैं तो चन्द खिलौना लै हों।" जैहों लोहट धरनि पर अबहीं तेरी गोद न ऐहौं।

सुरभि कौ पय पान न करि हौं, बेनी सिर न गहै हैं। हवैहों पूत नन्द बाबा कौ, तेरो सुत न कहे हौं।

मैया यशोदा द्वारा दूध पिलाने पर और लालच देने पर कि दूध पीने से चोटी जल्दी बड़ी हो जायेगी, कृष्ण द्वारा उत्सुकतावश बार बार चोटी को देखना अत्यन्त सुन्दर वर्णित है।

"मैया कबहि बढ़ेगी चोटी। किती बार मोहिं दूध पियत भई, यहा आजहूँ है छोटी।"

इसी प्रकार कृष्ण द्वारा आंख मिचौली खेलना, गाय चराने जाने की हठ करना, आदि कई प्रसंगों को सूरदास ने अत्यन्त सुन्दरता से वर्णित किया है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने उचित ही कहा है– "यशोदा के बहाने सूर ने मातृ हृदय का ऐसा स्वभाविक, सरल और हृदयग्राही चित्र खींचा है कि आश्चर्य होता है।"

निष्कर्ष : भक्तिकाल में तुलसीदास और सूरदास ने काव्य में माँ का रूप लौकिक धरातल पर चित्रित किया। नारी के रूपों में सबसे अधिक पूज्य और वंदनीय रूप माँ का है। समाज में और साहित्य में माँ का स्थान नारी चरित्र में सर्वश्रेष्ठ है और वह आज भी यथावत विधमान है।

भक्तिकाल में नारी उपदेशक, उद्धारक तथा वात्सल्य रस से परिपूर्ण थी, जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण कबीर की सखियों, सूरदास के द्वारा यशोदा के मातृ हृदय चित्रण, तथा तुलसी द्वारा कौशल्या के हृदय वर्णन में प्राप्त होता है। साहित्य के क्षेत्र में यह काल भक्ति काव्य के विराट रस स्रोत के रूप में प्रकट हुआ।

सन्दर्भ सूची

1. कबीर ग्रन्थावली – कबीर दास
2. रामचरित मानस – तुलसीदास
3. बालकाण्ड, राम चरित मानस – तुलसीदास
4. गीतावली – तुलसीदास
5. सूरसागर – सूरदास
6. साहित्य लहरी – सूरदास
7. सूर सारावली – सूरदास
8. www.google.com